

1 तीमुथियुस

1 पौलुस की ओर से, जो हमारे उद्धार करने वाले परमेश्वर और हमारी आशा मसीह यीशु के आदेश से मसीह यीशु का प्रेरित बना है,

^२तिमुथियुस को जो विश्वास में मेरा सच्चा पुत्र है, परम पिता परमेश्वर और हमारे प्रभु यीशु मसीह की ओर से अनुग्रह, दया और शांति प्राप्त हो।

झूठे उपदेशों के विरोध में चेतावनी

^३मार्कदुनिया जाते समय मैंने तुझसे जो इफिसुस में ठहरे रहने को कहा था, मैं अब भी उसी आग्रह को दोहरा रहा हूँ। ताकि तू वहाँ कुछ लोगों को झूठी शिक्षाएँ देते रहने, ^४काल्पनिक कहानियों और अनन्त वंशावलियों पर जो लड़ाई-झगड़ों को बढ़ावा देती हैं और परमेश्वर के उस प्रयोजन को सिद्ध नहीं होने देती, जो विश्वास पर टिका है, ध्यान देने से रोक सके। ^५इस आग्रह का प्रयोजन है वह प्रेम जो पवित्र हृदय, उत्तम चेतना और छल रहित विश्वास से उत्पन्न होता है। ^६कुछ लोग तो इन बातों से छिटक कर भटक गये हैं और बेकार के वाद-विवादों में जा फँसे हैं। ^७वे व्यवस्था के विधान के उपदेशक तो बनना चाहते हैं, पर जो कुछ वे कह रहे हैं या जिन बातों पर वे बहुत बल दे रहे हैं, उन तक को वे नहीं समझते।

^८हम अब यह जानते हैं कि यदि कोई व्यवस्था के विधान का ठीक ठीक प्रकार से प्रयोग करे, तो व्यवस्था उत्तम है। ^९अर्थात् यह जानते हुए कि व्यवस्था का विधान धर्मियों के लिये नहीं बल्कि उद्दण्डों, विद्रोहियों, अश्रद्धालुओं, पापियों, अपवित्रों, अधार्मिकों, माता-पिता को मार डालने वालों, हत्यारों, ^{१०}व्यभिचारियों, समलिंग कामुकों, शोषण कर्ताओं, मिथ्या वादियों, कसम तोड़ने वालों या ऐसे ही अन्य कामों के लिए हैं, जो उत्तम शिक्षा के विरोध में हैं। ^{११}वह शिक्षा परमेश्वर के महिमा-मय सुसमाचार के

अनुकूल है। वह सुधन्य परमेश्वर से प्राप्त होती है। और उसे मुझे सौंपा गया है।

परमेश्वर के अनुग्रह का धन्यवाद

^{१२}मैं, हमारे प्रभु यीशु मसीह का धन्यवाद करता हूँ। मुझे उसी ने शक्ति दी है। उसने मुझे विश्वसनीय समझ कर अपनी सेवा में नियुक्त किया है। ^{१३}यद्यपि पहले मैं उसका अपमान करने वाला, सताने वाला तथा एक अविनीत व्यक्ति था किन्तु मुझ पर दया की गयी क्योंकि एक अविश्वासी के रूप में यह नहीं जानते हुए कि मैं क्या कुछ कर रहा हूँ, मैंने सब कुछ किया। ^{१४}और प्रभु का अनुग्रह मुझे बहुतायत से मिला, और साथ ही वह विश्वास और प्रेम भी जो मसीह यीशु में है।

^{१५}यह कथन सत्य है और हर किसी के स्वीकार करने योग्य है कि यीशु मसीह इस संसार में पापियों का उद्धार करने के लिए आया है। फिर मैं तो सब से बड़ा पापी हूँ। ^{१६}और इसीलिये तो मुझ पर दया की गयी। कि मसीह यीशु एक बड़े पापी के रूप में मेरा उपयोग करते हुए आगे चल कर जो लोग उसमें विश्वास ग्रहण करेंगे, उनके लिये अनंत जीवन प्राप्ति के हेतु एक उदाहरण के रूप में मुझे स्थापित कर अपनी असीम सहनशीलता प्रदर्शित कर सके। ^{१७}अब उस अनन्त सम्राट अविनाशी, अदृश्य एक मात्र परमेश्वर का युग युगान्तर तक सम्मान और महिमा होती रहे। आमीन!

^{१८}मेरे पुत्र तीमुथियुस, भविष्यवाक्ताओं के वचनों के अनुसार बहुत पहले से ही तेरे सम्बन्ध में जो भविष्यवाणियों कर दी गयी थीं, मैं तुझे ये आदेश दे रहा हूँ, ताकि तू उनके अनुसार ^{१९}विश्वास और उत्तम चेतना से युक्त हो कर नेकी की लड़ाई लड़ सके। कुछ ऐसे हैं जिनकी उत्तम चेतना और विश्वास नष्ट हो गये हैं। ^{२०}हुमिनियुस और सिक्ंदर ऐसे ही हैं। मैंने उन्हें शैतान को सौंप दिया है

ताकि उन्हें परमेश्वर के विरोध में परमेश्वर की निन्दा करने से रोकने का पाठ पढ़ाया जा सके।

स्त्री-पुरुषों के लिये कुछ नियम

2 सबसे पहले मेरा विशेष रूप से यह निवेदन है कि सबके लिये आवेदन, प्रार्थनाएँ, अनुरोध और सब व्यक्तियों की ओर से धन्यवाद दिए जाएँ।¹ शासकों और सभी अधिकारियों को धन्यवाद दिये जाएँ। ताकि हम चैन के साथ शांतिपूर्वक सम्पूर्ण श्रद्धा और परमेश्वर के प्रति सम्मान से पूर्ण जीवन जी सकें।² यह हमारे उद्धार—कर्ता परमेश्वर को प्रसन्न करने वाला है। यह उत्तम है।³ वह सभी व्यक्तियों का उद्धार चाहता है और चाहता है कि वे सत्य को पहचानें⁴ क्योंकि परमेश्वर एक ही है और मनुष्य तथा परमेश्वर के बीच में मध्यस्थ भी एक ही है। वह स्वयं एक मनुष्य है, मसीह यीशु।⁵ उसने सब लोगों के लिये स्वयं को फिरौती के रूप में दे डाला है। इस प्रकार उसने उचित समय पर इसकी साक्षी दी।⁶ तथा इसी साक्षी का प्रचार करने के लिये मुझे एक प्रचारक और प्रेरित नियुक्त किया गया। (यह मैं सत्य कह रहा हूँ, झूठ नहीं) मुझे विधर्मियों के लिये विश्वास तथा सत्य के उपदेशक के रूप में भी ठहराया गया।

⁸इसीलिये मेरी इच्छा है कि हर कहीं सब पुरुष पवित्र हाथों को ऊपर उठाकर परमेश्वर के प्रति समर्पित हो बिना किसी क्रोध अथवा मन-मुटाव के प्रार्थना करें।

⁹इसी प्रकार स्त्रियों से भी मैं यह चाहता हूँ कि वे सीधी-सादी वेश-भूषा में शालीनता और आत्म-नियन्त्रण के साथ रहें। अपने आप को सजाने सँवारने के लिये वे केशों की वेणियाँ न सजायें तथा सोने, मोतियों और बहुमूल्य वस्त्रों से श्रृंगार न करें¹⁰ बल्कि ऐसी स्त्रियों को जो अपने आप को परमेश्वर की उपासिका मानती हैं, उनके लिए उचित यह है कि वे स्वयं को उत्तम कार्यों से सजायें।

¹¹एक स्त्री को चाहिये कि वह शांत भाव से समग्र समर्पण के साथ शिक्षा ग्रहण करे।¹² मैं यह नहीं चाहता कि कोई स्त्री किसी पुरुष को सिखाए पढ़ाये अथवा उस पर शासन करे। बल्कि उसे तो चुपचाप ही रहना चाहिए।¹³ क्योंकि आदम को पहले बनाया गया था और तब पीछे हव्वा को।¹⁴ आदम को बहकाया नहीं जा सका था किन्तु स्त्री को बहका लिया गया और वह पाप में पतित हो गयी।¹⁵ किन्तु

यदि वे माँ पने के कर्तव्यों को निभाते हुए विश्वास, प्रेम, पवित्रता और परमेश्वर के प्रति समर्पण में बनी रहें तो उद्धार को अवश्य प्राप्त करेंगी।

कलीसिया के निरीक्षक

3 यह एक विश्वास करने योग्य कथन है कि यदि कोई निरीक्षक बनना चाहता है तो वह एक अच्छे काम की इच्छा रखता है।¹ अब देखो उसे एक ऐसा जीवन जीना चाहिये जिसकी लोग न्यायसंगत आलोचना न कर पायें। उसके एक ही पत्नी होनी चाहिये। उसे शालीन होना चाहिये, आत्मसंयमी, सुशील तथा अतिथिस्तकार करने वाला एवं शिक्षा देने में निपुण होना चाहिये।² वह पियकड़ नहीं होना चाहिये, न ही उसे झगड़ालू होना चाहिये। उसे तो सज्जन तथा शांति-प्रिय होना चाहिये। उसे पैसे का प्रेमी नहीं होना चाहिये।³ अपने परिवार का वह अच्छा प्रबन्धक हो तथा उसके बच्चे उसके नियन्त्रण में रहते हों। उसका पूरा सम्मान करते हों।⁴ (यदि कोई अपने परिवार का ही प्रबन्ध करना नहीं जानता तो वह परमेश्वर की कलीसिया का प्रबन्ध कैसे कर पायेगा?)⁵ वह एक नया शिष्य नहीं होना चाहिये ताकि वह अहंकार से फूल न जाये। और उसे शैतान का जैसा ही दण्ड पाना पड़े।⁶ इसके अतिरिक्त बाहर के लोगों में भी उसका अच्छा नाम हो ताकि वह किसी आलोचना में फँस कर शैतान के फंदे में न पड़ जाये।

कलीसिया के सेवक

⁸इसी प्रकार कलीसिया के सेवकों को भी सम्मानीय होना चाहिये जिसके शब्दों पर विश्वास किया जाता हो। मदिरा पान में उसकी रुचि नहीं होनी चाहिये। बुरे रास्तों से उन्हें धन कमाने का इच्छुक नहीं होना चाहिये।⁹ उन्हें तो पवित्र मन से हमारे विश्वास के गहन सत्यों को धामे रखना चाहिये।¹⁰ इनको भी पहले निरीक्षकों के समान परखा जाना चाहिये। फिर यदि उनके विरोध में कुछ न हो तभी इन्हें कलीसिया के सेवक के रूप में सेवा-कार्य करने देना चाहिये।¹¹ इसी प्रकार स्त्रियों को भी सम्मान के योग्य होना चाहिए। वे निन्दक नहीं होनी चाहियें बल्कि शालीन और हर बात में विश्वसनीय होनी चाहियें।¹² कलीसिया के सेवक के केवल एक ही पत्नी होनी चाहिये तथा उसे अपने बाल-बच्चों तथा अपने घरानों

का अच्छा प्रबन्धक होना चाहिये। ¹³क्योंकि यदि वे कलीसिया के ऐसे सेवक के रूप में होंगे जो उत्तम सेवा प्रदान करते हैं, तो वे अपने लिये सम्मानपूर्ण स्थान अर्जित करेंगे। यीशु मसीह के प्रति विश्वास में निश्चय ही उनकी आस्था होगी।

हमारे जीवन का रहस्य

¹⁴मैं इस आशा के साथ तुम्हें ये बातें लिख रहा हूँ कि जल्दी ही तुम्हारे पास आऊँगा। ¹⁵यदि तुझे आने में समय लग जाये तो तुम्हें पता रहे कि परमेश्वर के परिवार में, जो सजीव परमेश्वर की कलीसिया है, किसी को अपना व्यवहार कैसा रखना चाहिये। कलीसिया ही सत्य की नींव और आधार स्तम्भ है। ¹⁶हमारे धर्म के सत्य का रहस्य निस्सन्देह महान् है :

वह नर देह धर प्रकट हुआ,
आत्मा ने उसे नेक साधा,
स्वर्गदूतों ने उसे देखा,
वह राष्ट्रों में प्रचारित हुआ।
जग ने उस पर विश्वास किया,
और उसे महिमा में ऊपर उठाया गया।

झूठे उपदेशकों से सचेत रहो

4 आत्मा ने स्पष्ट रूप से कहा है कि आगे चल कर कुछ लोग भटकाने वाले झूठे भविष्यवाक्ताओं के उपदेशों और दुष्टात्माओं की शिक्षा पर ध्यान देने लगेंगे और विश्वास से भटक जायेंगे। ²उन झूठे पाखण्डी लोगों के कारण ऐसा होगा जिनका मन मानों तपते लोहे से दाग दिया गया हो। ³वे विवाह का निषेध करेंगे। कुछ वस्तुएँ खाने को मना करेंगे जिन्हें परमेश्वर के विश्वासियों तथा जो सत्य को पहचानते हैं, उनके लिये धन्यवाद देकर ग्रहण कर लेने को बनाया गया है। ⁴क्योंकि परमेश्वर की रची हर वस्तु उत्तम है तथा कोई भी वस्तु त्यागने योग्य नहीं है बशर्ते उसे धन्यवाद के साथ ग्रहण किया जाये। ⁵क्योंकि वह परमेश्वर के वचन और प्रार्थना से पवित्र हो जाती है।

मसीह के उत्तम सेवक बनो

⁶यदि तुम भाइयों को इन बातों का ध्यान दिलाते रहोगे तो मसीह यीशु के ऐसे उत्तम सेवक ठहरोगे जिसका

पालन-पोषण, विश्वास के द्वारा और उसी सच्ची शिक्षा के द्वारा होता है जिसे तू ने ग्रहण किया है। ⁷बुढ़ियाओं की परमेश्वर विहीन कल्पित कथाओं से दूर रहो तथा परमेश्वर की सेवा के लिये अपने को साधने में लगे रहो। ⁸क्योंकि शारीरिक साधना से तो थोड़ा सा ही लाभ होता है जबकि परमेश्वर की सेवा हर प्रकार से मूल्यवान है क्योंकि इसमें आज के समय और आने वाले जीवन के लिये दिया गया आशीर्वाद समाया हुआ है। ⁹इस बात पर पूरी तरह निर्भर किया जा सकता है और यह पूरी तरह ग्रहण करने योग्य है। ¹⁰और हम लोग इसीलिये कठिन परिश्रम करते हुए जूझते रहते हैं। हमने अपनी आशाएँ सबके, विशेष कर विश्वासियों के, उद्धारकर्ता सजीव परमेश्वर पर टिका दी हैं।

¹¹इन्हीं बातों का आदेश और उपदेश दो। ¹²तू अभी युवक है। इसी से कोई तुझे तुच्छ न समझे। बल्कि तू अपनी बात-चीत, चाल-चलन, प्रेम-प्रकाशन, अपने विश्वास और पवित्र जीवन से विश्वासियों के लिये एक उदाहरण बन जा। ¹³जब तक मैं आऊँ तू शास्त्रों के सार्वजनिक पाठ करने, उपदेश और शिक्षा देने में अपने आप को लगाये रख। ¹⁴तुझे जो वरदान प्राप्त है, तू उसका उपयोग कर यह तुझे नबियों की भविष्यवाणी के परिणामस्वरूप बुजुर्गों के द्वारा तुझ पर हाथ रख कर दिया गया है। ¹⁵इन बातों पर पूरा ध्यान लगाये रख। इन ही में स्थित रह ताकि तेरी प्रगति सब लोगों के सामने प्रकट हो। ¹⁶अपने जीवन और उपदेशों का विशेष ध्यान रख। उन ही पर टिका रह क्योंकि ऐसा आचरण करते रहने से तू स्वयं अपने आपका और अपने सुनने वालों का उद्धार करेगा।

व्यवहार के कुछ नियम

5 किसी बड़ी आयु के व्यक्ति के साथ कठोरता से मत बोलो, बल्कि उन्हें पिता के रूप में देखते हुए उनके प्रति विनम्र रहो। अपने से छोटों के साथ भाइयों जैसा बर्ताव करो। ²बड़ी महिलाओं को मैं समझो तथा युवा स्त्रियों को अपनी बहन समझ कर पूर्ण पवित्रता के साथ बर्ताव करो।

³उन विधवाओं का विशेष ध्यान रखो जो वास्तव में विधवा हैं। ⁴किन्तु यदि किसी विधवा के पुत्र-पुत्री अथवा नाती-पोते हैं तो उन्हें सबसे पहले अपने धर्म पर चलते

हुए अपने परिवार की देखभाल करना सीखना चाहिये। उन्हें चाहिये कि वे अपने माता-पिताओं के पालन-पोषण का बदला चुकायें क्योंकि इससे परमेश्वर प्रसन्न होता है।⁵ वह स्त्री जो वास्तव में विधवा है और जिसका ध्यान रखने वाला कोई नहीं है, तथा परमेश्वर ही जिसकी आशाओं का सहारा है वह दिन रात विनती तथा प्रार्थना में लगी रहती है।⁶ किन्तु विषय भोग की दास विधवा जीते जी मरे हुए के समान है।⁷ इसलिये विश्वासी लोगों को इन बातों का (उनकी सहायता का) आदेश दो ताकि कोई भी उनकी आलोचना न कर पाये।⁸ किन्तु यदि कोई अपने रिश्तेदारों, विशेषकर अपने परिवार के सदस्यों की सहायता नहीं करता, तो वह विश्वास से फिर गया है तथा किसी अविश्वासी से भी अधिक बुरा है।

⁹ उन विधवाओं की विशेष सूची में जो आर्थिक सहायता ले रही हैं उसी विधवा का नाम लिखा जाये जो कम से कम साठ साल की हो चुकी हो तथा जो पतिव्रता रही हो।¹⁰ तथा जो बाल बच्चों को पालते हुए, अतिथि सत्कार करते हुए, पवित्र लोगों के पांव धोते हुए दुखियों की सहायता करते हुए, अच्छे कामों के प्रति समर्पित हो कर सब तरह के उत्तम कार्यों के लिये जानी-मानी जाती हो।

¹¹ किन्तु युवती-विधवाओं को इस सूची में सम्मिलित मत करो क्योंकि मसीह के प्रति उनके समर्पण पर जब उनकी विषय वासना पूर्ण इच्छाएँ हावी होती हैं तो वे फिर विवाह करना चाहती हैं।¹² वे अपराधिनी हैं क्योंकि उन्होंने अपनी मूलभूत प्रतिज्ञा को तोड़ा है।¹³ इसके अतिरिक्त उन्हें आलस की आदत पड़ जाती है। वे एक घर से दूसरे घर घूमती फिरती हैं तथा वे न केवल आलसी हो जाती हैं, बल्कि वे बातूनी बन कर लोगों के कामों में टाँग अड़ाने लगती हैं और ऐसी बातें बोलने लगती हैं जो उन्हें नहीं बोलनी चाहियें।¹⁴ इसलिये मैं चाहता हूँ कि युवती-विधवाएँ विवाह कर लें और संतान का पालनपोषण करते हुए अपने घर बार की देखभाल करें ताकि हमारे शत्रुओं को हम पर कटाक्ष करने का कोई अवसर न मिल पाये।¹⁵ मैं यह इसलिये बता रहा हूँ कि कुछ विधवाएँ भटक कर शैतान के पीछे चलने लगी हैं।

¹⁶ यदि किसी विश्वासी महिला के घर में विधवाएँ हैं तो उसे उनकी सहायता स्वयं करनी चाहिए और कलीसिया पर कोई भार नहीं डालना चाहिये ताकि कलीसिया सच्ची विधवाओं की सहायता कर सके।

¹⁷ जो बुजुर्ग कलीसिया की उत्तम अगुआई करते हैं, वे दुगुने सम्मान के पात्र होने चाहियें। विशेष कर वे जिनका काम उपदेश देना और पढ़ाना है।¹⁸ क्योंकि शास्त्र में कहा गया है, "बैल जब खलिहान में हो तो उसका मुँह मत बाँधो!"* तथा, "मजदूर को अपनी मजदूरी पाने का अधिकार है!"*

¹⁹ किसी बुजुर्ग पर लगाये गये किसी लांछन को तब तक स्वीकार मत करो जब तक दो या तीन गवाहियाँ न हों।²⁰ जो सदा पाप में लगे रहते हैं उन्हें सब के सामने डॉटो-फटकारो ताकि बाकी के लोग भी डरें।

²¹ परमेश्वर, यीशु मसीह और चुने हुए स्वर्गदूतों के सामने मैं सचाई के साथ आदेश देता हूँ कि तू बिना किसी पूर्वाग्रह के इन बातों का पालन कर। पक्षपात के साथ कोई काम मत कर।

²² बिना विचारे किसी को कलीसिया का मुखिया बनाने के लिए उस पर जल्दी में हाथ मत रख। किसी के पापों में भागीदार मत बन। अपने को सदा पवित्र रख।

²³ केवल पानी ही मत पीता रह। बल्कि अपने हाज़मे और बार बार बीमार पड़ने से बचने के लिए थोड़ा सा दाखरस भी ले लिया कर।

²⁴ कुछ लोगों के पाप स्पष्ट रूप से प्रकट हो जाते हैं और न्याय के लिये प्रस्तुत कर दिये जाते हैं किन्तु दूसरे लोगों के पाप बाद में प्रकट होते हैं।²⁵ इसी प्रकार भले कार्य भी स्पष्ट रूप से प्रकट हो जाते हैं किन्तु जो प्रकट नहीं होते वे भी छिपे नहीं रह सकते।

6 लोग जो अंधविश्वासियों के जूए के नीचे दास बने हैं, उन्हें अपने स्वामियों को सम्मान के योग्य समझना चाहिये ताकि परमेश्वर के नाम और हमारे उपदेशों की निन्दा न हो।² और ऐसे दासों को भी जिनके स्वामी विश्वासी हैं, बस इसलिये कि वे उनके धर्म भाई हैं, उनके प्रति कम सम्मान नहीं दिखाना चाहिये, बल्कि उन्हें तो अपने स्वामियों की और अधिक सेवा करनी चाहिये क्योंकि जिन्हें इसका लाभ मिल रहा है, वे विश्वासी हैं, जिन्हें वे प्रेम करते हैं।

मिथ्या उपदेश और सच्चा धन

इन बातों को सिखाते रहो तथा इनका प्रचार करते रहो।³ यदि कोई इनसे भिन्न बातें सिखाता है तथा हमारे

बैल ... बाँधो व्यवस्था. 25:4

मजदूर ... है लूका 10:7

प्रभु यीशु मसीह के उन सद्वचनों को नहीं मानता है तथा भक्ति से परिपूर्ण शिक्षा से सहमत नहीं है ⁴तो वह अहंकार में फूला है तथा कुछ भी नहीं जानता है। वह तो कुतर्क करने और शब्दों को लेकर झगड़ने के रोग से घिरा है। इन बातों से तो ईर्ष्या, बैर, निन्दा-भाव तथा गाली-गलौज ⁵एवम् उन लोगों के बीच जिनकी बुद्धि बिगड़ गयी है, निरन्तर बने रहने वाले मतभेद पैदा होते हैं, वे सत्य से वंचित हैं। ऐसे लोगों का विचार है कि परमेश्वर की सेवा धन कमाने का ही एक साधन है।

⁶निश्चय ही परमेश्वर की सेवा-भक्ति से ही व्यक्ति सम्पन्न बनता है। इसी से संतोष मिलता है। ⁷क्योंकि हम संसार में न तो कुछ लेकर आये थे और न ही यहाँ से कुछ लेकर जा पाएँगे। ⁸सो यदि हमारे पास रोटी और कपड़ा है तो हम उसी में सन्तुष्ट हैं। ⁹किन्तु वे जो धनवान बनना चाहते हैं, प्रलोभनों में पड़कर जाल में फँस जाते हैं तथा उन्हें ऐसी अनेक मूर्खतापूर्ण और विनाशकारी इच्छाएँ घेर लेती हैं जो लोगों को पतन और विनाश की खाई में ढकेल देती हैं। ¹⁰क्योंकि धन का प्रेम हर प्रकार की बुराई को जन्म देता है। कुछ लोग अपनी इच्छाओं के कारण ही विश्वास से भटक गये हैं और उन्होंने अपने लिये महान दुख की सृष्टि कर ली है।

याद रखने योग्य बातें

¹¹किन्तु हे परमेश्वर के जन, तू इन बातों से दूर रह तथा धार्मिकता, भक्तिपूर्ण सेवा, विश्वास, प्रेम, धैर्य और सज्जनता में लगा रह। ¹²हमारा विश्वास जिस उत्तम स्पष्टाई की अपेक्षा करता है, तू उसी के लिये संघर्ष करता रह और अपने लिये अनन्त जीवन को अर्जित कर ले।

तुझे उसी के लिये बुलाया गया है। तूने बहुत से साक्षियों के सामने उसे बहुत अच्छी तरह स्वीकारा है। ¹³परमेश्वर के सामने, जो सबको जीवन देता है तथा यीशु मसीह के सम्मुख जिसने पुन्तियुस पिलातुस के सामने बहुत अच्छी साक्षी दी थी, मैं तुझे यह आदेश देता हूँ कि ¹⁴जब तक हमारा प्रभु यीशु मसीह प्रकट होता है, तब तक तुझे जो आदेश दिया गया है, तू उसी पर बिना कोई कमी छोड़े हुए निर्दोष भाव से चलता रह। ¹⁵वह उस परम धन्य, एक छत्र, राजाओं के राजा और सम्राटों के प्रभु को उचित समय आने पर प्रकट कर देगा। ¹⁶वह अगम्य प्रकाश का निवासी है। उसे न किसी ने देखा है, न कोई देख सकता है। उसका सम्मान और उसकी अनन्त शक्ति का विस्तार होता रहे। आमीन।

¹⁷वर्तमान युग की वस्तुओं के कारण जो धनवान बने हुए हैं, उन्हें आज्ञा दे कि वे अभिमान न करें। अथवा उस धन से जो शीघ्र चला जाएगा कोई आशा न रखें। परमेश्वर पर ही अपनी आशा टिकाये जो हमें हमारे आनन्द के लिये सब कुछ भरपूर देता है। ¹⁸उन्हें आज्ञा दे कि वे अच्छे-अच्छे काम करें। उत्तम कामों से ही धनी बनें। उदार रहें और दूसरों के साथ अपनी वस्तुएँ बाँटें। ¹⁹ऐसा करने से ही वे एक स्वर्गीय कोष का संचय करेंगे जो भविष्य के लिये सुदृढ़ नींव सिद्ध होगा। इसी से वे सच्चे जीवन को थामे रहेंगे।

²⁰तीमथियुस, तुझे जो सौंपा गया है, तू उसकी रक्षा कर। व्यर्थ की सांसारिक बातों से बचा रह। तथा जो "मिथ्या ज्ञान" से सम्बन्धित व्यर्थ के विरोधी विश्वास है, उनसे दूर रह क्योंकि ²¹कुछ लोग उन्हें स्वीकार करते हुए विश्वास से डिग गये हैं। परमेश्वर का अनुग्रह तुम्हारे साथ रहे।

License Agreement for Bible Texts

World Bible Translation Center

Last Updated: September 21, 2006

Copyright © 2006 by World Bible Translation Center

All rights reserved.

These Scriptures:

- Are copyrighted by World Bible Translation Center.
- Are not public domain.
- May not be altered or modified in any form.
- May not be sold or offered for sale in any form.
- May not be used for commercial purposes (including, but not limited to, use in advertising or Web banners used for the purpose of selling online ad space).
- May be distributed without modification in electronic form for non-commercial use. However, they may not be hosted on any kind of server (including a Web or ftp server) without written permission. A copy of this license (without modification) must also be included.
- May be quoted for any purpose, up to 1,000 verses, without written permission. However, the extent of quotation must not comprise a complete book nor should it amount to more than 50% of the work in which it is quoted. A copyright notice must appear on the title or copyright page using this pattern: "Taken from the HOLY BIBLE: EASY-TO-READ VERSION™ © 2006 by World Bible Translation Center, Inc. and used by permission." If the text quoted is from one of WBTC's non-English versions, the printed title of the actual text quoted will be substituted for "HOLY BIBLE: EASY-TO-READ VERSION™." The copyright notice must appear in English or be translated into another language. When quotations from WBTC's text are used in non-saleable media, such as church bulletins, orders of service, posters, transparencies or similar media, a complete copyright notice is not required, but the initials of the version (such as "ERV" for the Easy-to-Read Version™ in English) must appear at the end of each quotation.

Any use of these Scriptures other than those listed above is prohibited. For additional rights and permission for usage, such as the use of WBTC's text on a Web site, or for clarification of any of the above, please contact World Bible Translation Center in writing or by email at distribution@wbtc.com.

World Bible Translation Center

P.O. Box 820648

Fort Worth, Texas 76182, USA

Telephone: 1-817-595-1664

Toll-Free in US: 1-888-54-BIBLE

E-mail: info@wbtc.com

WBTC's web site – World Bible Translation Center's web site: <http://www.wbtc.org>

Order online – To order a copy of our texts online, go to: <http://www.wbtc.org>

Current license agreement – This license is subject to change without notice. The current license can be found at: <http://www.wbtc.org/downloads/biblelicense.htm>

Trouble viewing this file – If the text in this document does not display correctly, use Adobe Acrobat Reader 5.0 or higher. Download Adobe Acrobat Reader from: <http://www.adobe.com/products/acrobat/readstep2.html>

Viewing Chinese or Korean PDFs – To view the Chinese or Korean PDFs, it may be necessary to download the Chinese Simplified or Korean font pack from Adobe. Download the font packs from: <http://www.adobe.com/products/acrobat/acrrasianfontpack.html>